(4) पुस्तकालय

पुस्तकों से सुंदर किसी अन्य वस्तु का संग्रह नहीं हो सकता क्योंकि यह वस्तुओं का नहीं बल्कि ज्ञान का संग्रह है। पुस्तकों में संसार भर का खजाना छिपा हुआ है। यह जानने वालों ने पुस्तकालय बनाना आरम्भ किया होगा। कुछ विद्वानों ने शुरू-शुरू में अपने घर में ही एक छोटा पुस्तकालय बनाया, से ज्ञान के संग्रह की शुरूआत हुई और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी लाभान्वित होती रही।

पुस्तक प्रेमी दुनिया में थोड़े ही हैं क्योंकि अधिकांश लोग दुनियाबी मामलों में उलझाव रखना धिक पसंद करते हैं। कुछ पुस्तक प्रेमी लोगों ने जनसमुदाय की रुचि पुस्तकों के प्रति जगाने के उद्देश्य सार्वजनिक पुस्तकालयों की स्थापना की। इन लोगों ने स्वयं की संग्रह की गई पुस्तकों को यहाँ रखने कोई झिझक नहीं दिखाई। आज दुनिया भर के विभिन्न शहरों में सार्वजनिक पुस्तकालय हैं जिसका लाभ लोग भरपूर उठा सकते हैं। सार्वजनिक पुस्तकालयों का संचालन किसी ट्रस्ट द्वारा अथवा नगर निगम संस्थाओं के द्वारा भी किया जाता है।

आज ज्ञान का क्षेत्र जितना विविधतापूर्ण है उतना पहले कभी नहीं था। ज्ञान और जानकारी के अगाध भंडार को लोगों तक सर्वसुलभ ढंग से पहुँचाने में पुस्तकों की भूमिका आज भी कम नहीं हुई

Scanned with CamScanner

है। हालांकि इंटरनेट जैसे साधन एक आसान विकल्प प्रस्तुत करने का दावा करते हैं मगर पाठकों और विद्यार्थियों के समक्ष उनका यह दावा खोखला सिद्ध हो जाता है। यही कारण है कि तमाम आधुनिक विकल्पों की मौजूदगी के बीच पुस्तकों की महत्ता बरकरार है। प्रकाशकों और पाठकों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।

पुस्तकों को सुरक्षित रखने, छाँटने व अलग-अलग खाने में रखने तथा पुस्तकालयों के सुचारू संचालन के लिए एक अलग विषय 'पुस्तकालय विज्ञान' की शिक्षा आजकल सभी प्रमुख विश्वविद्यालयों में दी जाती है। हजारों शिक्षितों को इस क्षेत्र में रोजगार प्राप्त हुआ है। खासकर विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों में एक या अधिक पुस्तकालय कर्मियों की आवश्यकता हर समय रहती है। कुछ अन्य संस्थानों जैसे प्रकाशकों, शिक्षा समूहों आदि में भी पुस्तकालयाध्यक्ष तथा अन्य सहयोगियों की नियुक्ति की जाती है। इस तरह पुस्तकों का रखरखाव एक शिक्षा का रूप ग्रहण कर चुका है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने घर पर एक पुस्तकालय की स्थापना नहीं कर सकता अतः उसे किसी सार्वजनिक पुस्तकालय से संपर्क स्थापित करना चाहिए। ऐसे कुछ पुस्तकालय वार्षिक सदस्यता के रूप में मामूली शुल्क लेते हैं। इसे अदा कर कोई भी व्यक्ति पूरे वर्ष अपनी रुचि की पुस्तकों का लाभ उठा सकता है। महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को पुस्तकों की मुफ्त सुविधा उपलब्ध करायी जाती है। पाठ्य पुस्तकों से संबंधित पुस्तकें भी हर समय रहती हैं। प्रत्येक मान्यता प्राप्त कॉलेज प्रतिवर्ष प्रकाशकों से विभिन्न विषयों से संबंधित पुस्तकों की खरीद करते हैं।

पुस्तकालय एक शांत स्थान होता है जहाँ शांतचित्त एवं एकाग्रचित्त होकर अध्ययन किया जा सकता है। इस तरह सोचा जाए तो पुस्तकालय एक विद्या मंदिर का स्वरूप ग्रहण कर लेता है। विद्या प्रेमी इस मंदिर में बैठकर ज्ञान रूपी अमृत का पान कर सकते हैं क्योंकि विद्या महत्व के बारे में कहा गया है-

"विद्या ददाति, विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्व धनमाप्नोती, धनात् धर्मः ततः सुखम् ॥"

अर्थात् विद्या विनय प्रदान करती है, विनय से पात्रता आती है, पात्रता प्राप्त होने पर धन प्राप्त होता है, धन से धर्म संबंधी कार्य संभव है, जो सुख प्रदान करता है।

कुछ लोग घर पर पुस्तकें तो रखते हैं परन्तु उन्हें यत्र-तत्र बिखेर कर रख देते हैं। इन्हें दीमक खा जाते हैं, इनकी हालत दिनों-दिन धूल व गंदगी के कारण खराब हो जाती है, कभी-कभी तो इन्हें चूहे भी खा जाते हैं। ऐसे में अगर इन पुस्तकों को एक अलमारी में सजाकर रखा जाए तो इन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। इसका दोहरा लाभ यह है कि घर में एक छोटा-सा पुस्तकालय हर समय मौजूद रहेगा। प्रत्येक पुस्तक-प्रेमी व्यक्ति अपने घर में पुस्तकों को संरक्षित करने की विधि जानता है।

विद्यालय में पुस्तकालय का बड़ा महत्व है। वास्तव में प्रधानाध्यापक विद्यालय का मस्तिष्क है, अध्यापक नाड़ी संस्थान है और पुस्तकालय उसका हृदय है। पुस्तकालय में ही बालक मानवीय ज्ञान तथा अनुभवों की निधि प्राप्त कर सकता है। यह नवीन ज्ञान की खोज का केन्द्र होता है। यह सबके बौद्धिक तथा आध्यात्मिक विकास में उल्लेखनीय सहयोग प्रदान करता है। वास्तव में पुस्तकालय एक बौद्धिक प्रयोगशाला है जहां हम अपनी बुद्धि के विकास हेतु सतत् प्रयास करते हैं। पुस्तकालय हमारे मस्तिष्क को स्वच्छ भोजन प्रदान करने वाला सुव्यवस्थित भोजनालय है। यह हमारी शैक्षिक दक्षता में वृद्धि करने का केन्द्र है।

पुस्तकालय का व्यावहारिक महत्व है। पुस्तकालय हमें पुस्तके पढ़ने के सुअवसर प्रदान करता है। हम अनेक पुस्तकें निजी तौर पर क्रय नहीं कर सकते इसके लिये पुस्तकालय बड़े उपयोगी होते हैं। पाठ्य-पुस्तके सीमित ज्ञान देती हैं। जब शिक्षक किसी ज्ञान को व्यापक करना चाहता है तब पुस्तकालय ही उसकी सहायता करता है। पुस्तकों की विविधता एवं उनके रखने का क्रम एवं व्यवस्था हमें पढ़ने के

Scanned with CamScanner

सुविधा प्रदान करती है। सन्दर्भ पुस्तकें विवादग्रस्त विषयों को स्पष्ट करने में सहायक होती है। विभिन्न कक्षा की पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं आदि की व्यवस्था व्यक्तिगत स्तर पर नहीं हो सकती है। इसकी सुविधा पुस्तकालय ही दे पाता है।

पुस्तकालय छात्रों के लिये बड़ा उपयोगी है। छात्र यहाँ आकर पाठ्य-पुस्तकों के अलावा अन्य सम्बन्धित पुस्तकें पढ़कर अपने ज्ञान-भण्डार में वृद्धि करते हैं, वे यहाँ आकर विविध पुस्तकों के अध्ययन के रुचि जाग्रत करते हैं। पुस्तकालय छात्रों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति जाग्रत करने में सहायक होते हैं। पुस्तकें छात्रों के सामने ज्ञान तथा विचारों का एक भण्डार प्रस्तुत करती है जिससे उनके दृष्टिकोणों का विकास होता है। पुस्तकालय बालकों के लिये मनोरंजनात्मक पुस्तकों की व्यवस्था करता है। इससे वे अपने विश्राम के समय का सदुपयोग करना सीखते हैं। पुस्तकालय बालकों में मौन-वाचन की आदत का विकास करता है।

पुस्तकालय के सम्बन्ध में विभिन्न शिक्षाविदों ने कहा है—

जॉन ड्यूवी के अनुसार, "पुस्तकालय विद्यालय का हृदय होता है और यहाँ पर छात्र विभिन्न इकाइयों, समस्याओं तथा प्रश्नों को लेकर आते हैं और फिर उन पर विचार-विमर्श करते हैं और नवीन ज्ञान के सन्दर्भ में उसका हल खोजते हैं जिसमें वह दूसरों के अनुभवों तथा संगृहीत विद्वता जो कि पुस्तकालय में सुसज्जित सुव्यवस्थित तथा प्रदर्शित रहती है, की सहायता लेते हैं।"

"Libraries are the heart of school and it at this centre pupils bring varied experiences, problems and questions and then discuss and pursue them in search of new light from the experiences of others and specially from the accumulated wisdom of the world gathered, arranged and displayed in the library."

डॉ० आर० कैली के अनुसार, "पुस्तकालय ज्ञान को सुरक्षित रखते हैं ताकि कुछ भी खो न जाये, ज्ञान को संगठित रखते हैं ताकि कुछ भी व्यर्थ न चला जाये और ज्ञान को प्राप्य बनाते हैं ताकि कोई भी उससे वंचित न रहे।"

"Libraries preserve knowledge so that nothing is lost, organize knowledge so that nothing is wasted and make knowledge available so that no one is deprived."

पुस्तकालय के उद्देश्य (Objectives)

विद्यालय में पुस्तकालय स्थापित करने के निम्नलिखित उद्देश्य होते हैं—

1. छात्रों के लिये विविध साहित्य उपलब्ध कराने की क्रमबद्ध सुव्यवस्था करना।
2. छात्रों में स्वस्थ साहित्य के अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
3. छात्रों में स्वाध्याय तथा मौन वाचन की आदतों का विकास करना।
4. छात्रों के ज्ञान को व्यापक बनाने के साधन जुटाना।
5. पाठ्य-पुस्तकों के अलावा अन्य सम्बन्धित पुस्तकें, पत्र-पत्रिकायें आदि की व्यवस्था करना।
6. शिक्षकों के लिये उच्च स्तरीय साहित्य की व्यवस्था करना।
7. छात्रों के लिये शब्द भण्डार बढ़ाने के लिये शब्द कोश तथा अतिरिक्त ज्ञान बढ़ाने के लिये सन्दर्भ पुस्तकें जुटाना।
8. कक्षा में दी गई सामान्य सूचना में अभिवृद्धि करना तथा पुस्तकों का सही ढंग से प्रयोग करना सिखाना।
9. छात्रों को स्वतन्त्र एवं मौलिक चिन्तन करने का प्रशिक्षण प्रदान करना।

Scanned with CamScanner

पुस्तकालय के लाभ (Advantages of Library)

मुख्य रूप से पुस्तकालय से निम्नलिखित लाभ हैं—

1. छात्रों को अतिरिक्त अध्ययन सामग्री सरलता व सहजता के साथ उपलब्ध हो जाती है।
2. अच्छे पुस्तकालय छात्रों में अध्ययन सम्बन्धी स्वस्थ आदतों का विकास करते हैं।
3. पुस्तकालय छात्रों को पुस्तकों के उचित प्रयोग का प्रशिक्षण देते हैं।
4. पुस्तकालय अवकाश के समय का सदुपयोग करने के अच्छे साधन हैं।
5. पुस्तकालय उन मूल्यवान पुस्तकों की व्यवस्था करते हैं जिन्हें अध्यापक या छात्र स्वयं क्रय नहीं कर सकते हैं।
6. छात्रों में स्वस्थ साहित्य पढ़ने की आदतों का विकास होता है।
7. पुस्तकालय में आधुनिकतम साहित्य का परिचय प्राप्त करते हैं।
8. यहाँ एक ही विषय पर अध्ययन हेतु अनेक पुस्तकें उपलब्ध हो जाती हैं जिससे छात्र विषय का गहनता से अध्ययन कर पाते हैं।
9. छात्रों में मौन-पाठन की आदत का विकास होता है।

कुछ सुझाव (Few Suggestions)

पुस्तकालय सेवा अधिक सफल हो तथा छात्रों के लिये अधिक उपयोगी हो, इसके लिये निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं—

1. पूर्णकालीन एवं पूर्ण प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्ष की व्यवस्था की जाये।
2. पुस्तकालय-कक्ष का निर्माण सुनियोजित हो।
3. पुस्तकों को खुले सेल्फों या रैक्स में रखा जाये।
4. पुस्तकों को छात्रों को देने और उनसे वापस लेने का समय सुनिश्चित हो।
5. लम्बी छुट्टियों में पुस्तकालय खुला रखा जाये।
6. पुस्तकालय उपयोग की आन्तरिक व्यवस्था शान्त, आकर्षक तथा सुन्दर होनी चाहिये।
7. पुस्तकालय व्यवस्था के लिये उपयुक्त नियम बना दिये जायें और उनका भली प्रकार से पालन किया जाये।
8. विभिन्न उपायों से छात्रों को पुस्तकालय का अधिक से अधिक उपयोग करने को प्रेरित किया जाये।
9. पुस्तकालय उपयोग के लिए विशेष कालांशों की व्यवस्था समय चक्र में की जाये।
10. छात्रों को कैटलॉग, सूची-पत्र तथा अनुक्रमणिका का महत्व तथा प्रयोग करने का ढंग बताया जाये।
11. उपयुक्त साज-सज्जा तथा फर्नीचर की व्यवस्था की जाये।
12. पुस्तकालय में सामान्यतः छात्रोपयोगी पाठ्य-सामग्री क्रय की जाये।
13. पुस्तकालय कालांश में छात्र पुस्तकालय में किसी शिक्षक की देख-रेख में स्वाध्याय करें।
14. पुस्तकालयाध्यक्ष का व्यवहार मृदुल, सहानुभूतिपूर्ण तथा सहयोगी भावनाओं से युक्त होना चाहिए।
15. प्रधानाध्यापक को चाहिए कि वह समय-समय पर पुस्तकालय का निरीक्षण करें और उसके विकास के लिए उदारता से बजट का प्रावधान करें।

Scanned with CamScanner